

हे करुणानिधि परमात्मा! ऐतिहासिक प्रतिष्ठा के अवसर पर
हमें श्रीसंघ दर्शन-वन्दन-साधर्मिक भक्ति का दुर्लभ अवसर प्रदान किया।
आपके श्रीचरणों में कीर्तिशः वन्दना... वन्दना... वन्दना...

मीठी मधुरी लपसी मंग, पकवानों की होगी बहार
साधर्मिक भक्ति में, धन्य-धन्य हुआ श्रीसंघ

